Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)

E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् NAAC से "A" ग्रेड प्रदत्त विश्वविद्यालयों का शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन संबंधी अध्ययन

श्रीमती सुशीला कुमारी शर्मा[1], डॉ. सुभाष पुरोहित[2]

[1]शोध छात्रा, (शिक्षा), जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ, विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)
[2]सहायक आचार्य, लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण, महाविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् NAAC से "A" ग्रेड प्रदत्त विश्वविद्यालयों का शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन संबंधी अध्ययन पर आधारित है। अधिष्ठाता/निदेशक समूह का मूल्यांकन अपेक्षाकृत कम, जबकि विद्यार्थी समूह का मूल्यांकन अपेक्षाकृत अधिक रहा। इसका संभावित कारण उत्तरदाताओं की भूमिका, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से प्रत्यक्ष संपर्क तथा मूल्यांकन व्यवस्था के प्रति उनके अनुभव में अंतर हो सकता है। विद्यार्थियों का अपेक्षाकृत अधिक प्रतिशत यह दर्शाता है कि वे शिक्षण एवं मूल्यांकन संबंधी व्यवस्थाओं को अपने प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर अपेक्षाकृत सकारात्मक रूप में देखते हैं, जबकि प्रशासनिक स्तर पर उत्तरदाता संस्थागत व्यवस्थाओं और उनके क्रियान्वयन की व्यापक चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए प्रतिक्रिया दे सकते हैं।

1. प्रस्तावना

पृथ्वी पर मानव की उत्पत्ति के साथ ही मानव अपने आस-पास के वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने की कौशिश करता रहा। भुल एवं प्रयास के माध्यम से सीखता रहा। सीखना ही मानव के लिए शिक्षित होने का प्रारंभ था। यही सीखना शिक्षा कहलायी एवं इसके विभिन्न सिद्धांत मानव द्वारा निर्मित किये गय। शिक्षा का सही रूप विभिन्न शैक्षिक संस्थानों के माध्यम से विकसित हुआ। वर्तमान में विद्यालय एवं विश्वविद्यालय शिक्षा के विकसित संस्थान है। विश्वविद्यालय विद्यार्थी को परिपक्व की अवस्था प्रदान करता है। यहां शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन की अधिक भूमिका रहती है। साथ ही कई पद्धतियों एवं चरण द्वारा विद्यार्थी अपने उच्च शिक्षा को सही तरिके से पूर्ण कर पाता है। NAAC मूल्यांकन के शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन पर कार्मिक एवं विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त मध्यमान की तुलना से संबंधित विभिन्न पहलुओं के संदर्भ में कार्मिकों एवं विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं की तुलना की गई है। इस क्षेत्र में विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच प्रभावी शैक्षणिक संवाद, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी, विविध एवं उपयुक्त शिक्षण विधियों का प्रयोग, मूल्यांकन प्रक्रिया की उपयोगिता तथा विद्यार्थियों को समय पर उपयोगी शैक्षणिक प्रतिक्रिया प्रदान किए जाने जैसे प्रमुख पहलुओं को सम्मिलित किया गया है।

2. शोध शीर्षक

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् NAAC से "A" ग्रेड प्रदत्त विश्वविद्यालयों का शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन संबंधी अध्ययन।

3. शोध प्रश्न

1. विश्वविद्यालय में शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन कैसा होता हैं?
2. विश्वविद्यालय में शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन कार्मिक एवं विद्यार्थी के अनुसार कैसे हैं?

4. शोध उद्देश्य

1. राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् NAAC से "A" ग्रेड प्रदत्त विश्वविद्यालयों का शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन संबंधी अध्ययन।

2.राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् NAAC से "A" ग्रेड प्रदत्त विश्वविद्यालयों का शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन संबंधी कार्मिक एवं विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. शोध परिकल्पना

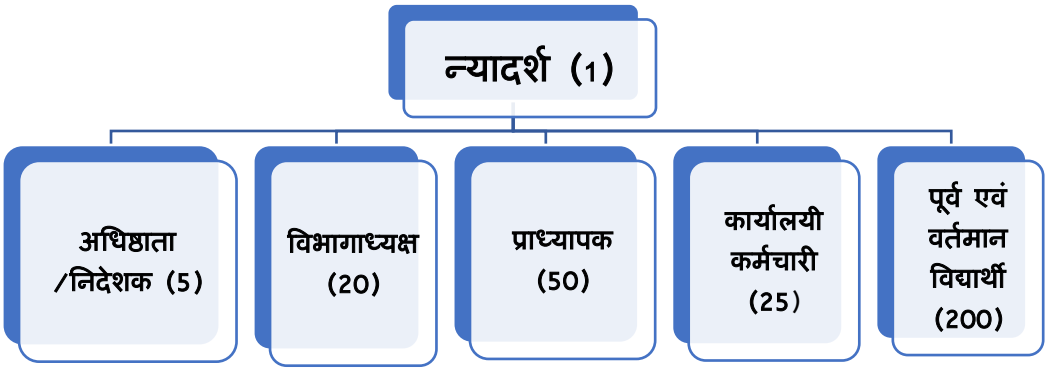
1. NAAC द्वारा "A" ग्रेड प्रदत्त मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में गुणवत्ता मूल्यांकन के क्षेत्र शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन पर कार्मिकों तथा विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है।

6. शोध परिसीमन

1. प्रस्तुत शोधकार्य का अध्ययन क्षेत्र राजस्थान राज्य के ''ए'' ग्रेड प्रदत विश्वविद्यालयों तक सीमित रखा गया।

7. न्यादर्श चयन

उपर्युक्त शोध हेतु सौद्देश्य प्रतिचयन विधि द्वारा न्यादर्श चयन किया गया जो इस प्रकार है :-



प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा न्यादर्श चयन हेतु राजस्थान राज्य के ''ए'' ग्रेड प्रदत विश्वविद्यालयों का चयन लॉटरी विधि से किया गया। जिसमें 1 विश्वविद्यालय का चयन किया गया। जिसके अन्तर्गत अधिष्ठाता/निदेशक 5, विभागाध्यक्ष 20, प्राध्यापक 50, कार्यालय कर्मचारी 25 एवं विद्यार्थी 200 का चयन करते हुए कुल 300 का न्यादर्श चयन किया गया।

8. शोध विधि, प्रविधि, उपकरण

8.1 शोध विधि

इस अनुसंधान में शोधार्थी ने राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् NAAC से "A" ग्रेड प्रदत्त विश्वविद्यालयों का शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन संबंधी अध्ययन हेतु शोधकर्त्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

8.2 शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण हेतु सांख्यिकी प्रविधियों में 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया।

8.3 शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण द्वारा आंकडों के संकलन हेतु स्वनिर्मित उपकरण **संस्थागत गुणवत्ता मापनी** का प्रयोग किया गया है।

9. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

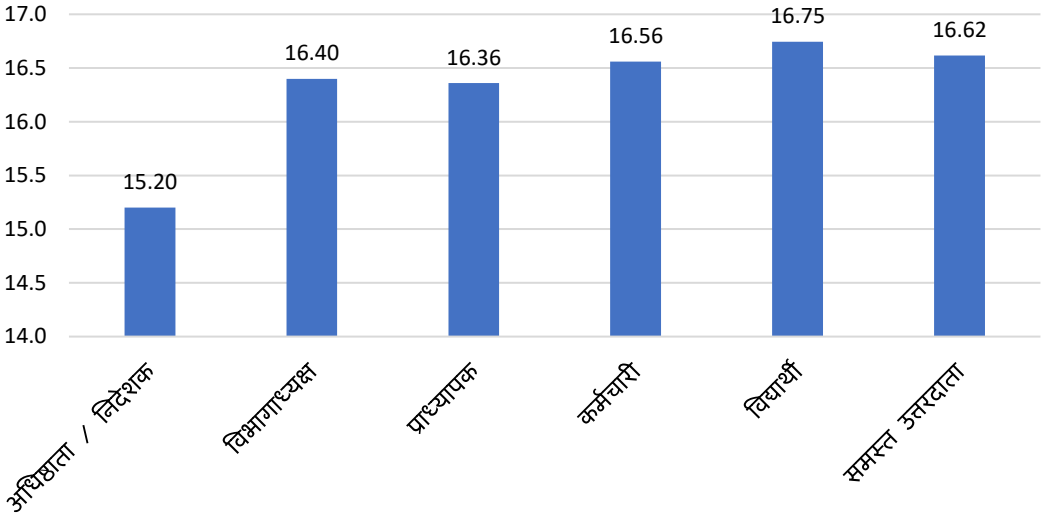
उद्देश्य 1 : राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् NAAC से "A" ग्रेड प्रदत्त विश्वविद्यालयों का शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन संबंधी अध्ययन।

सारणी संख्या 1

NAAC मूल्यांकन के शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन पर चयनित उत्तरदाताओं के मध्यमान, माध्य भार प्राप्तांक एवं प्रतिशत

	शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन		
	मध्यमान	माध्य भार प्राप्तांक	प्रतिशत
अधिष्ठाता / निदेशक (5)	15.20	3.04	60.80
विभागाध्यक्ष (20)	16.40	3.28	65.60
प्राध्यापक (50)	16.36	3.27	65.44
कर्मचारी (25)	16.56	3.31	66.24
विद्यार्थी (200)	16.75	3.35	66.98
समस्त उत्तरदाता (300)	16.62	3.32	66.47

ग्राफ संख्या 1
NAAC मूल्यांकन के शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन पर चयनित उत्तरदाताओं का मध्यमान



आरेख संख्या 1
NAAC मूल्यांकन के शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन पर चयनित उत्तरदाताओं के मध्यमान, माध्य भार प्राप्तांक एवं प्रतिशत

विश्लेषण :- सारणी संख्या 1.में NAAC मूल्यांकन के शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन के संबंध में सभी 300 उत्तरदाताओं का कुल मध्यमान 16.62 रहा, जबकि अधिकतम संभव मध्यमान 25 था। इसी प्रकार माध्य भार प्राप्तांक 3.32 रहा, जबकि अधिकतम संभव माध्य भार प्राप्तांक 5 था तथा कुल प्रतिशत 66.47% प्राप्त हुआ। अधिष्ठाता/निदेशक (5) समूह का मध्यमान 15.20, माध्य भार प्राप्तांक 3.04 तथा प्रतिशत 60.80% रहा, जो सभी समूहों में सबसे कम है। विभागाध्यक्ष (20) समूह का मध्यमान 16.40, माध्य भार प्राप्तांक 3.28 तथा प्रतिशत 65.60% रहा। प्राध्यापक)50) समूह का मध्यमान 16.36, माध्य भार प्राप्तांक 3.27 तथा प्रतिशत 65.44% रहा। कर्मचारी) 25) समूह का मध्यमान 16.56, माध्य भार प्राप्तांक 3.31 तथा प्रतिशत 66.24% रहा। विद्यार्थी) 200) समूह का मध्यमान 16.75, माध्य भार प्राप्तांक 3.35 तथा प्रतिशत 66.98% रहा, जो सभी समूहों में सर्वाधिक है।

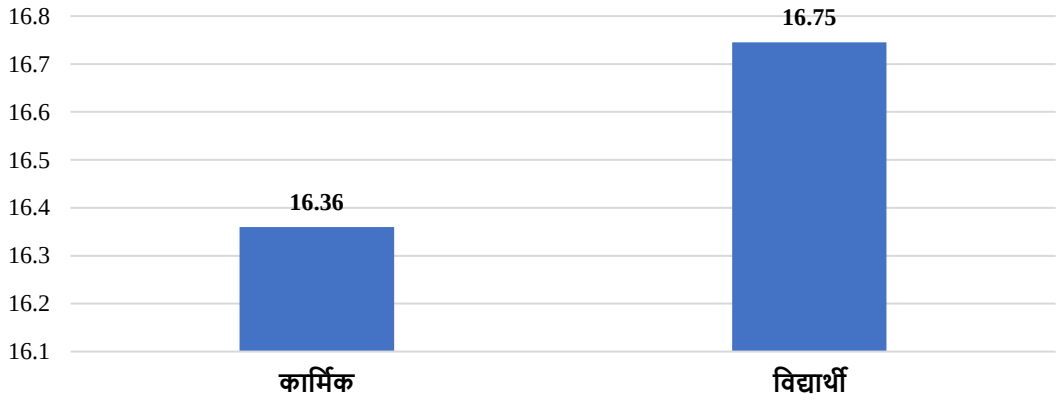
उद्देश्य सं. 2. : राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् NAAC से "A" ग्रेड प्रदत्त विश्वविद्यालयों का शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन संबंधी कार्मिक एवं विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी संख्या 2
NAAC मूल्यांकन के शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन पर कार्मिक एवं विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त मध्यमान की तुलना

	शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन	
	कार्मिक	विद्यार्थी
N	100	200

मध्यमान	16.36	16.75
मानक विचलन	1.124	2.548
मध्यमान अन्तर	0.385	
t' मान	1.442	
p मान	0.150	

ग्राफ 2
NAAC मूल्यांकन के शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन पर कार्मिक एवं विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त मध्यमान



आरेख संख्या 2
NAAC मूल्यांकन के शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन पर कार्मिक एवं विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त मध्यमान की तुलना

विश्लेषण :- सारणी संख्या 2 में NAAC मूल्यांकन के शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन पर कार्मिक एवं विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त मध्यमान की तुलना से संबंधित विभिन्न पहलुओं के संदर्भ में कार्मिकों एवं विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं की तुलना की गई है। इस क्षेत्र में विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच प्रभावी शैक्षणिक संवाद, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी, विविध एवं उपयुक्त शिक्षण विधियों का प्रयोग, मूल्यांकन प्रक्रिया की उपयोगिता तथा विद्यार्थियों को समय पर उपयोगी शैक्षणिक प्रतिक्रिया प्रदान किए जाने जैसे प्रमुख पहलुओं को सम्मिलित किया गया है। तालिका के अनुसार, 100 कार्मिकों का क्षेत्र–2 पर मध्यमान 16.36 तथा मानक विचलन 1.124 पाया गया, जबकि 200 विद्यार्थियों का मध्यमान 16.75 तथा मानक विचलन 2.548 रहा। इससे स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों का औसत प्राप्तांक कार्मिकों की अपेक्षा थोड़ा अधिक है। दोनों समूहों के मध्यमानों में 0.385 का अन्तर पाया गया, जो अपेक्षाकृत कम है।

परिकल्पना सं. 1. : NAAC द्वारा "A" ग्रेड प्रदत्त मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में गुणवत्ता मूल्यांकन के क्षेत्र शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन पर कार्मिकों तथा विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :- कार्मिकों एवं विद्यार्थियों के मध्यमानों के अन्तर की सांख्यिकीय सार्थकता की जाँच के लिए t-परीक्षण किया गया। प्राप्त t-मूल्य 1.442 तथा p-मूल्य 0.150 है। चूँकि p-मूल्य 0.05 से अधिक है, इसलिए दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच पाया गया अन्तर 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षण,

अधिगम एवं मूल्यांकन के क्षेत्र में कार्मिकों और विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं पाया गया। "NAAC द्वारा "A" ग्रेड प्रदत्त मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में गुणवत्ता मूल्यांकन के क्षेत्र शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन पर कार्मिकों तथा विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है" को **स्वीकृत** किया जाता है I

10. शोध से प्राप्त निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राप्त दत्तों का विष्लेषण करने के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष सामने आए :-

- विद्यार्थियों को उनके प्रदर्शन के संबंध में प्रतिक्रिया प्रदान की जाती है, जिससे वे अपनी शैक्षणिक कमियों एवं उपलब्धियों को समझ सकते हैं।
- प्रभावी फीडबैक केवल अंक या ग्रेड तक सीमित न होकर विद्यार्थियों को यह स्पष्ट करने वाला होना चाहिए कि उन्होंने कहाँ अच्छा प्रदर्शन किया है और किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है।
- मूल्यांकन के माध्यम से विद्यार्थियों की विषयवस्तु की समझ, ज्ञान के अनुप्रयोग तथा अधिगम की उपलब्धियों का आकलन किया जाता है।
- पारंपरिक व्याख्यान विधि के साथ चर्चा, उदाहरण, समस्या-समाधान, परियोजना-आधारित शिक्षण, प्रदर्शन तथा डिजिटल एवं मल्टीमीडिया संसाधनों का प्रयोग विद्यार्थियों की समझ को बेहतर बनाने में सहायक हो सकता है।
- प्राप्त t-मूल्य 1.442 तथा p-मूल्य 0.150 है। चूँकि p-मूल्य 0.05 से अधिक है, इसलिए दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच पाया गया अन्तर 0.05 स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है।

सन्दर्भ ग्रंथ :-

1. पाण्डेय, डॉ. रामशकल (2014), '' विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री'', श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. व्यास, डॉ. भगवतीलाल (2016), ''समकालीन भारत और शिक्षा'', राधा प्रकाशन प्रा. लि., आगरा।
3. कपिल, एच.के. (2007) ''अनुसंधान विधियाँ'', एच.पी. भार्गव बुक हाउस 4/230, कचहरी घाट, आगरा
4. कपिल, एच.के. (2010) ''सांख्यिकी के मूल तत्व'', अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा-2
5. भट्नागर, सुरेश (1992-93) 'शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
6. भार्गव, डॉ. महेश (2003), "आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन" वेदान्त पब्लिकेशन लखनऊ।
7. चौबे, डॉ. सरयू प्रसाद (2006) 'शिक्षा मनोविज्ञान, अनु प्रकाशन, जयपुर।
8. गैरेट हेनरी ई. (1989), 'शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकीय के प्रयोग कल्याणी पब्लिशर्स, उ.प्र. ।
9. माथुर, डॉ. एस.एस. (1993). 'शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा। पाठक,
10. Berman, P. & McLaughlin, M. (1978) Implementation of education innovation. Educational Forum, 40 (3) 345-370